तापमान

अधिकतम 34 डिग्री

न्यूनतम 21 डिग्री

हरिभूमि

सरगुजा-कोरिया भूमि

बिलासपुर, बुधवार, 10 सितम्बर 2025

अम्बिकापुर | सूरजपुर | बलरामपुर | विश्रामपुर | लखनपुर | रामानुजगंज

4 दल से अलग हुए दो दंतैल बने खतरनाक

आसरा इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग
जरहाडीह, रघुनाथपुर सरगुजा छ.ग.
मों. 9826156669, 7000288169
B.S.C. नर्सिंग
(4 वर्षीय कोर्स)
G.N.M. (3 वर्षीय कोर्स)
स्कॉलरशीप-शासन के नियमानुसार
पता - CTO चांदनी चौक, इण्डेन गैस गोदाम के पास, खैरवार रोड, मायापुर अंबिकापुर

खबर संक्षेप

धरसेड़ी में सात दिवसीय राजस्व शिविर आज से

सूरजपुर। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े की पहल पर जिले के ओड़गी विकासखंड के ग्राम पंचायत धरसेड़ी के पंचायत भवन में 10 से 17 सितंबर तक राजस्व शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। शिविर में ग्रामीणों की राजस्व व भूमि संबंधी समस्याओं, नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, जाति, निवास एवं आय प्रमाण पत्र जैसे कार्यों का निराकरण किया जाएगा।

प्रयास विद्यालयों के 9वीं में प्रवेश हेतु काउंसिलिंग 12 से

अम्बिकापुर। आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त ने बताया कि आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग द्वारा प्रयास आवासीय विद्यालय जिला राजनांदगांव, बलरामपुर एवं बिलासपुर में सत्र 2025-26 की कक्षा 9वीं के रिक्त सीट में प्रवेश हेतु विद्यार्थियों की वर्गवार चतुर्थ प्रतीक्षा सूची विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। चतुर्थ प्रतीक्षा में दर्शित विद्यार्थी निर्धारित तिथि एवं समय में अनिवार्य दस्तावेजों सहित काउंसलिंग स्थल प्रयास आवासीय बालक विद्यालय सड्डू उरकुरा मार्ग वीआईपी सिटी कॉलोनी के सामने जिला रायपुर में उपस्थित हो सकते हैं। काउंसलिंग की निर्धारित तिथि अनुसार अनुसूचित जनजाति एवं विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूह (पीवीटीजी) बालक एवं बालिका के लिए तथा अनुसूचित जाति बालक एवं बालिका के लिए 12 सितम्बर को काउंसलिंग होगी। इसी प्रकार अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग एवं अल्पसंख्यक बालक-बालिका के लिए 13 सितम्बर को काउंसिलिंग होगी। काउंसलिंग का समय प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक निर्धारित है।

लापरवाही बरतने पर 3 भृत्य निलंबित

बलरामपुर। विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय बलरामपुर के अंतर्गत शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक बलरामपुर के भृत्य धुरन राम, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पिण्ड्रा के भृत्य राकेश गुप्ता एवं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चिलमा के भृत्य रविन्द्र इतगे द्वारा पदीय दायित्वों में लापरवाही बरतने एवं छत्तीसगढ़ सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के नियम 3 के उल्लंघन के फलस्वरूप प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया है। डीईओ डीएन मिश्रा द्वारा भृत्य धुरन राम, राकेश गुप्ता एवं रविन्द्र इतगे को छत्तीसगढ़ सिविल सेवा नियम 1966 के नियम 9(1) (क) के तहत निलंबित कर दिया है।

अधिकारियों ने लिया स्थिति का जायजा

50 साल पुराने बरकेला बांध में 16 स्थानों से हो रहा रिसाव

हरिभूमि न्यूज ⏭ अम्बिकापुर

लुत्ती और गेरसा बांध के फूटने के बाद अब सरगुजा जिले में एक और बांध खतरे के संकेत दे रहा है। जिले के 50 साल पुराने बरकेला बांध में पिछले एक माह से 16 जगह रिसाव हो रहा है। हालांकि समय रहते जल संसाधन विभाग ने इसका पता लगाया और रिसाव को कम करने के लिए फिल्टर लगाए गए है जिससे मिट्टी का कटाव ना हो सके। मंगलवार को कलेक्टर के साथ ही विभागीय अधिकारियों ने इस बांध का निरीक्षण कर स्थिति का जायजा लिया है और अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए है।

खास बात
- आस पास के घरों को खाली कराने के निर्देश

बता दें कि बलरामपुर जिले में तातापानी में लुत्ती और सरगुजा के लुंड्रा स्थित गेरसा बांध के फूटने के बाद शासन प्रशासन अलर्ट मोड में आ गया है। रायपुर से लगातार प्रदेश भर के 30 साल से अधिक पुराने बांधों की विशेष निगरानी करने के निर्देश दिए गये है और उनकी मॉनिटरिंग की प्रतिदिन रिपोर्ट ली जा रही है। इसी कड़ी में सरगुजा जिले में एक और बांध की जानकारी सामने आई है जो खतरनाक स्थिति में है। यह बांध अंबिकापुर विकासखंड के ग्राम बरकेला में स्थित है। बताया जा रहा है कि बरकेला स्थित इस बांध का निर्माण लगभग 1978 में किया गया था। इस बार सरगुजा में हुई बारिश ने नया रिकॉर्ड कायम किया है और यही वजह है कि जिले के सभी बांध लगभग फुल हो चुके है और बांधों के वेस्ट वीयर से पानी लगातार निकल रहा है। बरकेला का यह बांध भी पूरी तरह से लबालब है। मंगलवार को कलेक्टर ने बरकेला बांध का निरीक्षण किया और बांध में जलभराव, तटबंध की स्थिति और मिट्टी के कटाव का जायजा लिया। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बांध की निरंतर देखरेख और निगरानी की जाए। उन्होंने बांध के समीप बने मकानों को तत्काल खाली कराने के निर्देश दिए, ताकि आपात स्थिति में किसी भी प्रकार की जान-माल की हानि न हो। निरीक्षण के दौरान मौजूद उपसरपंच, वार्ड पंच और ग्रामीणों को कलेक्टर ने बांध की वास्तविक स्थिति पर सतत निगरानी रखने को कहा। इस दौरान एसडीएम फागेश सिन्हा, जल संसाधन विभाग के कार्यपालन अभियंता अशोक निरंजन, तहसीलदार अमन चतुर्वेदी, नायब तहसीलदार सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

बांध के रिसाव वाले क्षेत्र का निरीक्षण करते कलेक्टर व जल ससाधन विभाग के अधिकारी।

रिसाव को नियंत्रित करने लगाए गए फिल्टर

बताया जा रहा है कि बरकेला बांध में लगभग एक माह से रिसाव हो रहा है। रिसाव की जानकारी मिलने के बाद बांध सुरक्षा को लेकर टीम ने निरीक्षण किया था और 16 स्थानों पर रिसाव का चिन्हांकन किया है। फिलहाल डेम से रिसाव को नियंत्रित करने के साथ ही मिट्टी कटाव को रोकने के लिए सैंड मेटल, गिट्टी और बोल्डर का फिल्टर लगाया गया है। इस फिल्टर के कारण मिट्टी कटाव नहीं हो रहा है और फिलहाल बांध पर कोई खतरा नहीं होने की बात कही जा रही है। हालांकि अधिकारियों का कहना है कि उक्त बांध के मरम्मत के जीर्णोद्धार के लिए बजट में प्रावधान किया गया है और अगले वर्ष बारिश से पहले मरम्मत का कार्य किया जाएगा लेकिन इसके पहले इस बांध पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।

टीम रख रही है निगरानी

बरकेला बांध का निरीक्षण किया गया है। यह बांध 50 साल पुराना है। इसमें 16 स्थानों से पानी रिसाव हो रहा है। हमारी डेम सेफ्टी की टीम लगातार निगरानी रख रही है। मिट्टी कटाव रोकने और फिल्टर बनाए गए है। फिलहाल बांध सुरक्षित है। अगले वर्ष इस बांध का जीर्णोद्धार किया जाएगा।

-अशोक निरंजन, ईई, जल संसाधन विभाग

होर्डिंग लगाते समय हाई टेंशन तार से सट गया लोहे का एंगल, जलकर एक युवक की मौत

हरिभूमि न्यूज ⏭ वाड्रफनगर

मंगलवार को फ्लैक्सी बोर्ड लगाने के दौरान हाईटेंशन तार की चपेट में आकर एक मजदूर की मौत हो गई जबकि तीन लोग झुलस गए। लोहे का एंगल तरंगित तार की चपेट में आने से यह घटना हुई। इस घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। फिलहाल पुलिस द्वारा शव को पीएम उपरान्त परिजन के सुपुर्द कर दिया गया है और घायलों का उपचार जारी है लेकिन इस घटना ने एक बड़ी लापरवाही को उजागर कर दिया है। ठेकेदार द्वारा बिना किसी सुरक्षा उपाय के और बिना अनुमति लिए अवैध रूप से होर्डिंग लगाने का काम किया जा रहा था।

- अवैध रूप से लगाया जा रहा था फ्लैक्सी, तीन घायल

बताया जा रहा है कि मंगलवार की सुबह नगर में चौकी के समीप ही चार मजदूर विज्ञापन की होर्डिंग लगाने का काम कर रहे थे। मजदूरों ने लगभग 20 फीट के लोहे के एंगल में फ्लेक्सी को फिट किया और जैसे ही उन्होंने गड्ढा खोदकर होर्डिंग को सीधा खड़ा किया होर्डिंग का लोहा ऊपर से गुजरे 11 हजार केवीए के तार से टच कर गया। हाईटेंशन तार की सम्पर्क में आते ही लोहे के एंगल में करंट प्रवाहित हो गया और मौके पर काम कर रहे चार मजदूर करेंट की चपेट में आ गए। इस घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया। आनन फानन में घायलों को उपचार के लिए सिविल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया जहां एक मजदूर को मृत घोषित कर दिया गया। मृतक की पहचान राजपुर के कर्रा निवासी 21 वर्षीय दीपक राम आ. विजय के रूप में की गई है जबकि कर्रा निवासी सूरज प्रसाद, अनमोल और अमन घायल है। घायलों का उपचार जारी है। घायल मजदूर सूरज प्रसाद ने बताया कि वे रामानुजगंज के मुकेश फ्लैक्सी के लिए ठेके पर काम करते है और उन्हें एक होर्डिंग लगाने के 12 सौ रुपए दिए जाते है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पीएम उपरान्त परिजन के सुपुर्द कर दिया है।

जिला अस्पताल में घायलों का चल रहा उपचार।

अवैध होर्डिंग की बाढ़

सबसे बड़ी बात यह है कि नगर में इन दिनों अवैध होर्डिंग की बाढ़ आ गई है। व्यावसायिक विज्ञापन के बोर्ड बड़े पैमाने पर लगाए जा रहे है। नगर पंचायत की जमीन पर लग रहे इन होर्डिंग की नपं प्रशासन से कोई अनुमति भी नहीं ली जाती है। इस होर्डिंग को लगाने के लिए भी नगर पंचायत से कोई अनुमति नहीं ली गई थी। इसे लेकर जो जानकारी सामने आई है उसके मुताबिक स्थानीय नेताओं द्वारा अपने फायदे के लिए नियमों को ताक में रखकर होर्डिंग लगवाए जा रहे है। इससे नगर पंचायत को राजस्व की हानि हो रही है वहीं अब एक युवक को अपनी जान गवानी पड़ी।

नहीं ली गई है अनुमति

होर्डिंग फ्लैक्स लगाने की अनुमति नगर पंचायत से नहीं ली गई है। इसके साथ ही नगर में अन्य होर्डिंग के लिए भी अनुमति नहीं दी गई है। इस मामले की जांच कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

-जितेन बहादुर पटेल, सीएमओ नपं

करंट की चपेट में आने से वृद्ध की गई जान

अम्बिकापुर। लखनपुर थाना अंतर्गत ग्राम सिंघीटाना निवासी तिलसाय केरकेट्टा आ. स्व. सहाल (70 वर्ष) घर के बोर का स्टार्टर खराब होने से बोर चालू करने के लिए विद्युत तार जोड़ रहा था। तार जोड़ने के दौरान ही करंट की चपेट में आ गया। घटना की जानकारी तब लगी जब पुत्र आया तो देखा बोर के समीप अचेत पड़ा हुआ था। पुत्र ने तार को डंडे से अलग कर पिता को तत्काल मेडिकल कॉलेज अस्पताल लेकर पहुंचा जहां चिकित्सकों ने जांच उपरांत वृद्ध को मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पुलिस ने मर्ग कायम करने के पश्चात शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजन के सुपुर्द किया है।

लापता बुजुर्ग का झलरिया जंगल में मिला जला शव

राजपुर। लापता बुजुर्ग का जला हुआ शव झलरिया जंगल में बरामद किया गया है। मृतक लकवा की बीमारी से जूझ रहे थे। अब तक की जांच में व्यवसायी द्वारा खुद ही पेट्रोल डालकर आत्महत्या किए जाने की बात कही जा रही है। पुलिस द्वारा शव को पीएम उपरान्त परिजन के सुपुर्द कर दिया गया है और मामले की जांच चल रही है। बताया जा रहा है कि राजपुर खुटहनपारा निवासी 72 वर्षीय मुद्रिका सोनी 7 सितम्बर को की दोपहर 12 बजे घर से बिना कुछ बताए निकल गये थे और शाम तक वापस नहीं लौटे। बुजुर्ग के घर नहीं आने पर परिजन ने उनकी खोजबीन शुरू की लेकिन सफलता नहीं मिली जिसके बाद परिजन ने मामले की शिकायत पुलिस से की थी। पुलिस द्वारा गुमशुदगी का मामला दर्ज कर बुजुर्ग की तलाश शुरू की। इस बीच 8 सितम्बर को परिजन को सूचना मिली कि मुद्रिका सोनी को राजपुर में ही एक दुकान से गैलन, झोला और माचिस खरीदते हुए देखा गया था। सामान खरीदने के बाद बुजुर्ग शिवम बस में बैठकर बलरामपुर की ओर निकल रहे थे। ऐसे में पस्ता पुलिस को घटना से अवगत कराया गया और परिजन भी पस्ता के लिए रवाना हुए। पस्ता थाना प्रभारी विमलेश सिंह ने बताया कि झलरिया गांव के सरपंच ने गांव के जंगल में तक व्यक्ति का जला हुआ शव मिलने की सूचना दी थी जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने परिजन की मदद से मृतक की पहचान मुद्रिका सोनी के रूप में की गई। मृतक लकवा की बीमारी से जूझ रहे थे। संभावना है कि उन्होंने खुद पर पेट्रोल डालकर माचिस मार लिया जिससे जलकर उनकी मौत हो गई। एसडीओपी याकूब मेनन ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत होता है मृतक ने राजपुर से ही 5 लीटर का गैलन, झोला माचिस राजपुर से लिया गया था उसके बाद सेमरसोत जंगल में बस से उतरते देखा गया था। उन्होंने कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद स्पष्ट कारण पता चल सकेगा।

- खुद पर पेट्रोल डालकर आत्महत्या किए जाने की आशंका

तालाब में डूबने से 8 वर्षीय किशोर की मौत

दरिमा। तालाब में अकेले नहाने गए 8 वर्षीय किशोर की डूबने से मौत हो गई। किशोर देर शाम तक घर नहीं लौटा तो परिजन ने उसकी तलाश प्रारंभ किया।ग्राम कोटिया निवासी शांतनु सिंह आ.दिलीप सिंह (8 वर्ष) अपने मामा सुखविलास सिंह के घर दरिमा में रहकर केजी-2 में पढ़ाई कर रहा था। सोमवार को वह स्कूल से वापस घर लौटा तथा खेलने के लिए शाम 3 बजे बाहर निकल गया। शाम होने पर वह घर नहीं लौटा तो चिंतित परिजन उसे तलाशने निकले। इस दौरान एक बच्चे ने शंकर तालाब की सीढ़ी पर शांतनु की चप्पल व कपड़े होने की सूचना दी परिजन भागते हुए पहुंच तालाब में कूदकर तलाश की तो शांतनु मिला। परिजन तत्काल उसे अस्पताल ले गए जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मंगलवार को पीएम उपरांत शव परिजन को सौंपा। शांतनु की मौत से परिजन का रो-रो कर बुरा हाल है।

ट्रक में 440 बोरी यूरिया लोडकर तस्कर ले जा रहे थे यूपी

हरिभूमि न्यूज ⏭ अम्बिकापुर

एक तरफ यूरिया के लिए किसान भटक रहे हैं वहीं दूसरी तरफ तस्कर बेखौफ होकर पड़ोसी राज्यों में यूरिया की तस्करी कर रहे हैं। बि चौ लि यों द्वारा यूरिया की तस्करी की सूचना पर एसडीएम आनंद राम नेताम के नेतृत्व में राजस्व एवं कृषि विभाग के अधिकारियों ने यूरिया लोड एक ट्रक को जब्त किया है।

- सूचना पर एसडीएम ने ग्राम चूनापाथर में पकड़ा

कोचियों एवं बिचौलियों के विरूद्ध लगातार कार्रवाई एवं उर्वरक दुकानों की नियमित जांच करने के लिए कृषि विभाग के दावे के बावजूद यूरिया की कालाबाजारी थमने का नाम नहीं ले रही है। किसानों को समितियों से समय पर यूरिया उपलब्ध नहीं हो रही है जिसके कारण वे महंगे दामों पर बिचौलियों से यूरिया खरीद रहे हैं दूसरी तरफ उर्वरक व्यवसायी जमकर यूरिया की कालाबाजारी कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि रविवार को देर रात किसी व्यक्ति ने एसडीएम आनंदराम नेताम को तस्करों द्वारा एक ट्रक यूरिया यूपी ले जाने की सूचना दी। सूचना पर एसडीएम ने राजस्व एवं कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ ट्रक का पीछा किया। कड़ी मशक्कत के बाद टीम ने ग्राम पंचायत सनावल के पास ग्रमा चूनापाथर में घेराबंदी कर यूरिया लोड ट्रक को जब्त कर सनावल पुलिस के सुपुर्द कर दिया। इस दौरान देर रात होने के कारण यूरिया के बोरियों की गिनती नहीं हो सकी। दूसरे दिन एसडीएम ने कृषि अधिकारियों को घटनास्थल पर पहुंचकर जांच करने के निर्देश दिए। दूसरे दिन कृषि विभाग की टीम स्थल पर पहुंचकर जांच की तो ट्रक में 440 बोरी यूरिया मिली। अनुमान लगाया जा रहा है कि हाल ही में यूरिया की रैक पहुंची थी तथा उर्वरक व्यवसाइयों को यूरिया की आपूर्ति की थी। किसी व्यवसाई द्वारा महंगे दामों पर यूपी के विचौलिए को यूरिया बेची गई होगी। कृषि विभाग की जांच में अब तक इसका खुलासा नहीं हो सका है कि तस्कर किस व्यवसाई से यूरिया खरीदकर यूपी ले जा रहे थे।

इस संबंध में प्रभारी उपसंचालक कृषि राम चंद्र भगत ने बताया कि मामले की जांच चल रही है। ट्रक में 440 बोरी यूरिया मिली है। बिचौलिए किस दुकान से यूरिया खरीदे थे अभी इसकी जानकारी नहीं मिली है।

कृषि विभाग कर रहा जांच

ट्रक से यूरिया यूपी ले जाने की सूचना मिली थी। सूचना पर हमने ट्रक का पीछा किया। ग्राम चूना पाथर के पास ट्रक को पकड़ा गया। मामले की जांच का अधिकार कृषि विभाग को है इसलिए कृषि अधिकारी को जांच के निर्देश दिए गए है।

-आनंद राम नेताम एसडीएम

कोरकू, भील मुरिया, राजा मुरिया जनजाति में मृतक स्तंभ

परम्परा

डा. नीलिमा गुप्ता

बस्तर की जनजातियों में पाषाणयुगीन प्रागैतिहासिक मृतक संस्कारों की प्रथा आज भी देखी जाती है। कोरकू, भील मुरिया, राजा मुरिया, दंडाभी माड़िया, तथा अबूझमाड़िया जनजातियों में मृतक संस्कारों की यह परम्परा विद्यमान है। कोरकू जनजाति में व्यक्ति की मृत्यु होने पर काष्ठ निर्मित जिसे कोरकू मृतक स्तंभ मण्डा, मुण्डा, मण्डो अथवा गाथा पटिया कहा जाता है, जिसे सिडोली उत्सव आयोजित कर स्थापित करते हैं। पौष या माघ माह में घर के मुखिया तथा रिश्तेदारों सहित सुतार (लकड़ी) को तिलक लगाकर स्मृति चिन्ह उकेरने का कार्य आरंभ किया जाता है।

मण्डा दो प्रकार से बनाया जाता है। पहले प्रकार के

अनुसार चतुर्भुज आकार का स्तम्भ दो फीट चौड़ा तथा तीन चार फीट लंबा मोटे पटिया वाला होता है। इसके एक ही भाग पर पूर्वजों की आकृतियां मुख्य रूप से मृतक के प्रतीक स्वरूप आकृति उकेरी जाती है। दूसरी घुड़सवार की आकृति के ऊपर चंद्रमा - सूर्य बनाए जाते हैं। इन आकृतियों को बनाने की अवधारणा यह है कि व्यक्ति खुले हाथ आता है और खुले हाथ घोड़े पर सवार होकर चंद्रलोक होते हुए सूर्यलोक में जाता है। दूसरे प्रकार के लगभग पांच फीट लंबे, मोटे, चौरस स्तंभ का शीर्ष भाग मंदिर के समान होता है। इसके अग्र भाग में अधिकतर चांद सूरज तथा दाहिने भाग में गोदना गोदने वाले कलाकारों द्वारा मूंगा मूंगनी, पृष्ठ तथा बाएं भाग में पूर्वजों की प्रतीक आकृतियां उकेरी जाती हैं। स्तंभ का शेष भाग सुंदर बेल -बूटों, पशु - पक्षियों, भित्ति चित्रों, गोदना चित्रों तथा विविध ज्यामितीय आकृतियों से अलंकृत किया जाता है। वैरियर एल्विन के अनुसार ज्ञान स्मृति स्तंभों में कोरकू मण्डा श्रेष्ठ होते हैं।

ऐतिहासिक

डा. रामकुमार बेहार

छत्तीसगढ़ में आधुनिक युग का आरंभ

छत्तीसगढ़ में इतिहासकार आधुनिक युग का आरंभ 1741 ई. को मानते हैं। एक तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि 1741ई में मराठा सेनापति भास्कर पंत ने रतनपुर के राजा रघुनाथ सिंह को परास्त किया। रघुनाथ सिंह जी को शासन से पृथक कर अपने व्यक्ति को शासन सूत्र का संचालक नियुक्त किया। इस समय बिंबाजी भोंसले रतनपुर पहुंचकर औपचारिक रूप से इस अंचल का शासन सूत्र संभालते हैं। उल्लेखनीय है कि बिंबाजी भोंसले ने पिता की मृत्यु के पश्चात अपने सेनापति पांडुरंग को छत्तीसगढ़ पर अधिकार करने के लिए भेजा, मगर पांडुरंग को सफलता नहीं मिली, पराजय व निराशा से वह वापस लौटा था। बिंबाजी स्वयं एक बड़ी सेना व अनुभवी सेना नायकों से आर पार की लड़ाई लड़ने आया था। इसी समय आधिपत्य वाले क्षेत्र में बीमार पड़ने के कारण मोहन सिंह की मृत्यु हो गई। आगे छत्तीसगढ़ पर मराठा आधिपत्य के मार्ग की बाधा दूर हुई। ऐसी स्थिति में मई 1757 ई से ही छत्तीसगढ़ के इतिहास का आधुनिक युग का आरंभ मानना अधिक उपयुक्त होता है।

लोक साहित्य

डा. कांति कुमार जैन

छत्तीसगढ़ के मध्य भाग की छत्तीसगढ़ी

छत्तीसगढ़ में रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग जिले में बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी मध्य भाग की छत्तीसगढ़ी कहलाती है। इसे भाषा शास्त्रियों ने परिनिष्ठित, केंद्रीय या साधु छत्तीसगढ़ी भी कहा जाता है। इसके भाषा क्षेत्र में रायगढ़ जिले का पश्चिम भाग, जांजगीर चांपा, कवर्धा, राजनांदगांव जिले के साथ छुईखदान, तथा उत्तरी कांकेर जिले के भू भाग आते हैं। छत्तीसगढ़ के इस भाषा स्वरूप को लेकर दो तरह के मत व्यक्त किए जाते हैं। एक वर्ग बिलासपुर रतनपुर की छत्तीसगढ़ी को मानक मानता है, तो दूसरा वर्ग रायपुर की छत्तीसगढ़ी को। रायपुरी और बिलासपुरी छत्तीसगढ़ी के बीच शिवनाथ नदी एक तरह से विभाजक रेखा का कार्य करती है। वस्तुतः बिलासपुरी और रायपुरी छत्तीसगढ़ी में कोई मौलिक अंतर नहीं है। इनमें कतिपय परसर्गों, धातुओं और शब्दों के प्रयोग एवं अर्थ में अंतर दिखता है। रायपुर की छत्तीसगढ़ी में आदर्श रूपों में धातु के साथ ' अव' तथा बिलासपुरी में ' आ ' का प्रयोग होता है। परसर्गों में भी कर्मकारक को लेकर अंतर है। रायपुरी में ' ला ' का और बिलासपुरी में उसके स्थान पर ' का ' का प्रयोग किया जाता है। दोनों रूपों में संज्ञा पदो, सर्वनाम में भी किंचित अंतर दिखाई देता है। यह भी सत्य है कि रतनपुर छत्तीसगढ़ की प्राचीन राजधानी होने के कारण उसके रूप को पूर्व में परिणिष्ठित माना जाता था। किन्तु लंबे समय से रायपुर छत्तीसगढ़ का केन्द्र है। प्रचार प्रसार एवं प्रशासन की केंद्रीयता के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ी के आधुनिक रूप की निमित्त में रायपुर की अधिक भूमिका रही है। एतदर्थ, रायपुर छत्तीसगढ़ी को मानक मान लेने के आग्रह में औचित्य प्रतीत होता है।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

परब विशेष

डा. पीसीलाल यादव

पूर्वजों के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करते हैं पितर पाख में

छत्तीसगढ़ में धार्मिक रीति रिवाजों और परम्परा को मनाने की संस्कृति सदियों से चली आ रही है। अपने पूर्वजों को श्राद्ध तर्पण देने का ऐसा ही पर्व है - पितर पाख। यह क्वार कृष्ण पक्ष एकम से प्रारंभ होता है। इसमें पंद्रह दिनों तक पितरों को पिंड दान और तिल सहित जल का तर्पण दिया जाता है। प्रथम दिवस पितर बइसकी कहलाता है।

पितृ पक्ष लगते ही महिलाएं ओरवाती को गोबर से लिपती हैं। चौक पूर कर फूल चढ़ाती हैं। पितर को तर्पण देने वाला व्यक्ति जल तर्पण के समय दूब, कुश, तरोई पान, उड़द दाल व चावल का उपयोग कर पितरों को स्मरण करता है। पुरुष पितर जिस तिथि को दिवंगत होते हैं, उसी तिथि को उन्हें तर्पण दिया जाता है। नवमी के दिन माताओं को, पंचमी के दिन बच्चों व कुंवारों को तथा अकाल मृत्यु प्राप्त पितरों को चतुर्दशी को तर्पण दिया जाता है।

इन दिनों बरा, सोहारी, खीर आदि व्यंजन बना कर पितरों को चढ़ाया जाता है फिर परिवार जनों व इष्ट मित्रों को निमंत्रित किया

जाता है। पितृ पक्ष में दान का बड़ा महत्व है। अतः ब्राह्मणों व भांजा भांजियों को राशि, अन्न आदि दान में दिया जाता है। पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता, आदर, श्रद्धा का भाव जगाने वाला यह पर्व पितृ ऋण से ऊऋण होने की प्रेरणा देता है।

गांव की कहानी : टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

लद्दी से लब्दी और लब्दी से हुआ गांव गब्दी

छत्तीसगढ़ के बालोद जिला मुख्यालय के दक्षिण दिशा में लगभग बयालीस किमी की दूरी पर बसे गांव गब्दी के स्थापत्य काल अट्ठारहवीं शताब्दी है। इस समय दक्षिण कोसल छत्तीसगढ़ के दुर्ग क्षेत्र के अंतर्गत गुंडरदेही रियासत में रायवंश के जमींदारी थी। रियासत नगरी से सोलह किमी दूरी पर ही गब्दी गांव बसा है। ग्राम पटेल व सेवानिवृत्त शिक्षक पी आर खरांशु के जनश्रुति के मुताबिक कुछ अनाज व्यापारी बैलगाड़ी से कहीं जा रहे थे। शाम होने पर रात्रि-विश्राम के लिए रुके। तभी उन्हें बबूल के झुरमुट से कीचड़ से सना एक भैंसा दिखाई दिया। करीब जाकर देखा तो पता चला कि वहां पर एक छोटा पोखर है। पोखर में पानी कम और लद्दी अर्थात कीचड़ अधिक था। व्यापारियों ने वहीं पर रात बिताई। इस तरह उन व्यापारियों का उसी रास्ते से आना-जाना चलता रहा। जब भी पोखर में पर्याप्त पानी रहता था, वे रात बिताते थे। धीरे-धीरे व्यापारी उस विश्राम स्थल पर बसने लग गए। एक बस्ती बन गई। बस्ती का नाम लद्दी रखा गया। लद्दी से लब्दी हुआ। समय के साथ लब्दी गांव ही गब्दी

कहलाया। वो छोटा सा पोखर आज बांधा देव तालाब कहलाता है। तालाब के शीतला माता मंदिर में क्वाँर नवरात्र को ज्योत-जँवारा व ज्योत-कलश की स्थापना अंचल में प्रसिद्ध है।कालांतर में अर्जुन कोष्टा गाँव के पहले जमींदार हुए। अटल कोष्टा, भरत कोष्टा, रामलाल, बिंझवार हल्बा, सुकलाल मुकरदम,अभय राम कलार, फकीर खरांशु, चुरामन लाल राव गुरुजी गाँव के नामी व्यक्ति हुए। हीरालाल कोष्टा गांव के पहले सरपंच हुए। इस क्षेत्र में गाँव गब्दी से ही संगीतमय रामायण प्रतियोगिता की शुरुआत हुई, जो अनवरत जारी है। ग्राम गब्दी में मंजे हुए लोक कलाकार भी हुए। आज यह गांव शिक्षा के साथ जागरूक गांव होने के साथ विकास के नए नए आयाम गढ़ रहा है।

सुरता

आशा झा

आंचलिक कला और साहित्य को समृद्ध करने में काफी योगदान रहा दानेश्वर शर्मा का

छत्तीसगढ़ अंचल के दुर्ग जिले के धमधा मार्ग में स्थित ग्राम मेड़ेसरा के निवासी रहे प. दानेश्वर शर्मा जी अपने जीवन को लोककला और साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिए। आप भिलाई इस्पात संयंत्र में अधिकारी के रुप में अपनी सेवाएं दी। भिलाई इस्पात संयंत्र में 5 दिवसीय लोक कला महोत्सव की शुरुआत आपने की थी। इस भव्य मंच के माध्यम से आपने आंचलिक कलाकारों को भिलाई इस्पात संयंत्र के लोक कला महोत्सव में स्थान देकर उन्हें ऊंचाई प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। इसका सुखद परिणाम यह हुआ कि आपकी प्रेरणा से राज्य और देश में कई कलाकार अपनी कला का आज जादू बिखेर रहे हैं। इनमें पद्म

विभूषित तीजन बाई, देवदास बंजारे, ऋतु वर्मा, खुमान लाल साव जी जैसे अनेक विधा के कलाकार अंचल की लोक कला को देश विदेश में पहुंचाए। आप स्वयं एक साहित्यकार रहे तथा आपके द्वारा लिखित कई कालजई गीत आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित होते रहते हैं। कई पुस्तकों का प्रकाशन आपका हुआ है, तथा श्रीमद भागवत गीता का छत्तीसगढ़ी में आपने अनुवाद किया है। आप छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष भी रहे हैं। आपने अमेरिका के न्यूयार्क में 2007 को आठवीं विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मिलित हुए। श्रीमद भागवत पुराण के अच्छे कथा वाचक के रुप में भी आप जाने गए। छत्तीसगढ़ी फिल्मों में भी आपके गीतों को शामिल किया गया है।

कला जगतः डा. निशा शर्मा

मध्य काल में भी प्रभावी रहा ददरिया

हमारे ग्रामीण अंचल में बैलगाड़ी आवागमन का महत्वपूर्ण साधन रहा है। अक्सर देखने में आता है कि ग्रामीण अपने बेलों को विभिन्न रंगों में सजाता संवारता है। ऐसी सजे संवरे बैलगाड़ी में अगर कोई ग्रामीण बाला चढ़ने को उत्सुक है तो वह दिलवाली होगी। श्रृंगारिक भावनाओं का परिचय मनुज प्रवृत्ति एवं व्यवहार से प्रदर्शित हो जाती है। अंचल विशेष की स्पष्ट छवि मन में अंकित हो जाती है। मध्य काल की लोक गाथाओं में तंत्र मंत्र का मायाजाल विद्यमान है। इसका प्रभाव ददरिया में भी है -

गाड़ी मा डारों गोबर खरसी।
थोपे डारो मोहनी जबरदस्ती।

मध्य काल में नाथ सिद्ध परम्परा का प्रचलन हुआ। उसी के समानांतर यहां भी जंगलीय जीवन में बैगा, जादू टोना ,

तंत्र मंत्र का प्रभाव पनपा। गौड़ जाति की एक शाखा बैगा, सम्मोहन, उच्चाटन आदि तंत्र मंत्र एवं जड़ीबूटियों का प्रयोग देखने को मिला।

कुछ लोग जो इस अंचल के दूर के वासी हैं, उनकी धारणा बन गई कि छत्तीसगढ़ में पुरुष ही नहीं, स्त्रियां भी जादू, तंत्र मंत्र, टोना टोटका जानती हैं और बाहर से आए लोगों को सम्मोहित कर लेती हैं। सम्मोहन की कला में यहां की स्त्रियां पारंगत थीं, यहां की लोक गाथाओं और ददरिया में भी यह स्पष्ट झलकता है।लगभग यह संस्कृति अब समाप्त हो चुकी है।

रीतिकाल में रचनाकार, नायक एवं नायिकाएं, कृष्ण एवं राधिका में प्रत्यारोपण करके श्रृंगारिक भावनाओं को प्रतिबिंबित करते रहे। इसका प्रभाव ददरिया में भी पड़ा है -

आमा लगाए ओरी के ओरी।
एमा रेंगे कन्हैया जांवर जोड़ी।

रहस्यात्मक अध्यात्म को भी चित्रित एवं विशिष्ट ढंग से समझना ददरिया कि मौलिकता है। आधे स्वर्ग में दुनिया की जो स्थिति है उसे देखें इस ददरिया में -

आधा सरग में उड़ेला मरही।
पांच नाम ला सुमर ले तोर चोला तरही।

निर्माण पूर्ण होने के बाद भी शौचालय में लटका ताला

ग्राम पंचायत के सामुदायिक शौचालय का लोगों को नहीं मिल रहा लाभ, बना शो पीस

हरिभूमि न्यूज ⏭ रजपुरीकला

स्वच्छ भारत मिशन के तहत विकासखंड के हर पंचायत में लोगों की सुविधा के लिए सामुदायिक शौचालय का निर्माण कराया गया। हैरानी की बात यह है कि लाखों की लागत से कराए गए सा मु दा यि क शौचालय के पूर्ण होने के बावजूद क्षेत्र के लोगों को इसका लाभ नहीं मिल रहा है। आलम यह है कि शौचालय का निर्माण कराने के बाद से ही ताला जड़ दिया गया है जिससे लाखो की लागत से बनाई गई सामुदायिक शौचालय मात्र शो पीस बनकर रह गई है।

खास बात

- प्रत्येक ग्राम पंचायत में 3 लाख 50 हजार की लागत से कराया गया है निर्माण

केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायतों में सामुयिक शौचालय का निर्माण कराया जाना है। इसी तारतम्य में विकासखंड लखनपुर अंतर्गत सभी ग्राम पंचायत में स्वच्छ भारत मिशन के तहत सामुदायिक शौचालय का निर्माण प्रत्येक ग्राम पंचायतों में 3 लाख 50 हजार रुपए की लागत से किया गया है। विकास खंड में जहां करोड़ों रुपए की लागत से शौचालय निर्माण किया गया है। हैरानी की बात है कि शौचालय का निर्माण कार्य करा दिया गया है परंतु शौचालय में न तो पानी का व्यवस्था है न टंकी लगाया गया है जिससे लाखों की लागत से निर्माण कराया गया शौचालय शो पीस बन कर ग्राम पंचायत का शोभा बढ़ा रही है। प्रत्येक पंचायत को 2020-21 में 3 लाख 50 हजार फंड जारी किया गया हैं परन्तु संबंधित अधिकारियों एवं प्रतिनिधियों की उदासीन रवैया की वजह से केन्द्र सरकार की योजना धरातल पर कारगर साबित नहीं हुई। जनपद पंचायत लखनपुर क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत सिरकोतंगा, पुहपुटरा, गणेशपुर, बिनकरा, लहपटरा, पटरा टोली, नवापारा, लटोरी, निम्हा, पोतका, गुमगारा में भी 3 तीन 50 हजार का सामुदायिक शौचालय निर्माण कराया गया है। ग्रामीणों की माने तो ग्राम पंचायत सिरकोतंगा में सामुदायिक शौचालय का निर्माण हुए तीन साल से अधिक हो गए बावजूद इसके आज तक शौचालय में ताला लटका हुआ है। इस तरह की स्थित आसपास ग्राम पंचायत की है जहां शौचालय निर्माण के बाद से ही शौचालय में ताला लगा दिया गया है। ऐसे में गांव के लोगों को सामुदायिक शौचालय का लाभ नहीं मिल पा रहा है। गांव में सामुदायिक शौचालय होने के बावजूद लोग खुले में शौच करने को मजबूर है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में जिस उद्देश्य से लाखो की लागत से सामुदायिक शौचालय का निर्माण कराया गया है वह सार्थक साबित होता नजर नहीं आ रहा है।

ताला लगे शौचालय के सामने मौजूद ग्रामीण।

ग्रामीणों की बढ़ी परेशानी

ग्राम पंचायत सिरकोतंगा में जिस स्थान पर सामुदायिक शौचालय का निर्माण किया गया है उसके समीप मंदिर, बाजार व हायर सेकेण्डरी स्कूल संचालित है। ऐसे में धार्मिक आयोजन के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूजा अर्चना करने पहुंचते है जबकि साप्ताहिक बाजार में बड़ी संख्या में ग्रामीण अपनी उपज बेचने तथा लोग खरीदारी करने पहुंचते है। ऐसे में कई लोगों को शौचालय की जरूरत पड़ती है परंतु सामुदायिक शौचालय में ताला लगे होने के कारण लोगों को सामुदायिक शौचालय का लाभ नहीं मिल पाता और लोग खुले में जाने को मजबूर होते है। इस तरह की स्थिति विकासखंड लखनपुर के कई ग्राम पंचायत की है जहां सामुदायिक शौचालय में 24 घंटे ताला लटकते आसानी से देखा जा सकता है।

शो पीस बने शौचालय

क्षेत्र के ग्रामीण राजेश राजवाड़े, पवन राम राजवाड़े , देवी चरण राजवाड़े, माणिकचंद राजवाड़े, ठाकुर प्रसाद राजवाड़े, सुधीर राजवाड़े, सूरज प्रसाद राजवाड़े, अमर राजवाड़े, देवनाथ राजवाड़े, जगन्नाथ राजवाड़े ,भीख नाथ राजवाड़े, गोकुल प्रसाद राजवाड़े, रामलाल राजवाड़े, रविन्द्र राजवाड़े, सुब्रन राजवाड़े राहुल, सहबर, सुलोचन राम, उर्मिला रजवाड़े, पुष्पा राजवाड़े, सुशीला राजवाड़े, शांति राजवाड़े, कृष्णा राजवाड़े, मंजू राजवाड़े ने बताया कि विकासखंड लखनपुर के ग्राम पंचायतों में आनन फानन में कराई गई सामुदायिक शौचालय निर्माण के बाद लोगों को जिस तरह से शौचालय का लाभ मिलना चाहिए वैसा लाभ नहीं मिल सका। ऐसे में लाखों की लागत से निर्मित सामुदायिक शौचालय मात्र ग्राम पंचायत का शोभा बढ़ाने के लिए शो पीस बनकर रह गया है।

उपयोग किए बिना हो गई जर्जर

विकास खंड के कई ग्राम पंचायत ऐसे है जहां सामुदायिक शौचालय निर्माण होने के बाद से ताला लटका हुआ है। ऐसे में देखरेख व समय पर मरम्मत नहीं होने से सामुदायिक शौचालय भी पूरी तरह जर्जर हो चुका है। ग्रामीणों का आरोप है कि जब भी आला अधिकारी निरीक्षण के लिए आते हैं तो उन्हें सिर्फ सड़क के किनारे बने शौचालय दिखा दिया जाता है जबकि अन्य पंचायत की जमीनी हकीकत कुछ और है। ग्रामीणों की मांग है कि लाखो की लागत से बने शौचालयों की मरम्मत और देखरेख की व्यवस्था के साथ साफ-सफाई और पानी की सुविधा सुनिश्चित की जाए, ताकि लोग खुले में शौच जाने को मजबूर न हों।

कराई जाएगी मरम्मत

ग्राम पंचायत सिरकोतंगा, पुहपुटरा, केनापारा सहित अन्य ग्राम पंचायत में सामुदायिक शौचालय का निर्माण कराया गया है। सामुदायिक शौचालय की मरम्मत व व्यवस्था बनाने संबंधित विभाग को बोलकर ठीक करवाती हूं। जल्द ही ग्रामीणों को सामुदायिक शौचालय का लाभ मिलेगा।

-**स्वच्छा सिंह**, जनपद सीईओ लखनपुर

खबर संक्षेप

केंद्रीय मंत्री तोखन से वन विकास निगम अध्यक्ष ने की मुलाकात

सूरजपुर। केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू से उनके दिल्ली स्थित निवास पर छत्तीसगढ़ वन विकास निगम के अध्यक्ष रामसेवक पैकरा तथा पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष बाबूलाल अग्रवाल ने सौजन्य भेंट की। इस दौरान प्रदेश के समग्र विकास, संगठनात्मक गतिविधियों तथा राजनीतिक रणनीति को लेकर विस्तृत चर्चा की। मुलाक़ात को सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक बताते हुए उपस्थित नेताओं ने कहा कि प्रदेश की प्रगति और जनता की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए संगठन और सरकार के बीच बेहतर तालमेल आवश्यक है। बैठक में संगठन की मजबूती और भविष्य की योजनाओं को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया।

यूरिया खाद की किल्लत को लेकर कांग्रेस का धरना प्रदर्शन कल

रामानुजगंज। जिला कांग्रेस अध्यक्ष केपी सिंहदेव के अध्यक्षता एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. अजय तिर्की के आतिथ्य में रामानुजगंज में सुबह 11 बजे से भारत माता चांदनी चौक पर 11 सितंबर को यूरिया खाद की किल्लत एवं 266 रुपये के जगह पर 1 हजार रुपये मे खरीदने को मजबूर होने के कारण किसानों को हो रही परेशानी एवं वन भूमि अधिकार पट्टा प्राप्त जमीन में लगाए धान का पंजीयन गिरदावरी नहीं होने को लेकर धरना प्रदर्शन कर आंदोलन का निर्णय जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा ली गई है। धरना प्रदर्शन में कांग्रेस कार्यकर्ता, निर्वाचित जनप्रतिनिधि, युवक कांग्रेस, महिला कांग्रेस, एनएसयूआई, सेवादल एवं सभी प्रकोष्ठ पदाधिकारी को धरना प्रदर्शन में उपस्थित होने कहा है।

महिला से दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

शंकरगढ़। जंगल से बकरी चराने गई महिला से दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है।
पुलिस के अनुसार महिला 3 सितम्बर को बैल व बकरी चराने के लिए दोपहर 2 बजे गोलाडिपा बजरमारा जंगल गई थी। इस दौरान महिला को अकेला पाकर सतेश्वर कोरवा ने उसे झाड़ी में खींच लिया और जबरन दुष्कर्म किया। आरोपी ने शिकायत करने पर महिला को जान से मारने की धमकी दी और भाग गया। दहशत में महिला ने घटना की जानकारी किसी को नहीं दी। 4 सितम्बर को महिला अपनी बहन के साथ भरतपुर बाजार से लौट रहे थी। इस दौरान फिर से आरोपी ने उन्हें घेर लिया और छेड़छाड़ करने लगा। ऐसे में महिला ने 7 सितम्बर को घटना की शिकायत पुलिस से की पुलिस ने मामले में पोड़ीकला निवासी 25 वर्षीय सतेश्वर पहाड़ी कोरवा आ. बउला पहाड़ी कोरवा को बीएनएस की धारा 64, (2) के तहत गिरफ्तार कर लिया है।

मंत्री लक्ष्मी ने धरसेड़ी आंबा केंद्र का किया औचक निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ सूरजपुर

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े भटगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम धरसेड़ी स्थित आंगनबाड़ी केंद्र का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंत्री राजवाड़े ने केंद्र में बच्चों को प्रदत्त पोषण आहार की गुणवत्ता और उपलब्धता का जायजा लिया। उन्होंने आंगनबाड़ी परिसर की स्वच्छता, बच्चों की उपस्थिति, खेल-खेल में सीखने की व्यवस्था तथा कार्यकर्ताओं की मौजूदगी की जानकारी ली।

- बच्चों को मिलने वाले पोषण आहार, स्वच्छता व्यवस्था का लिया जायजा

मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं से नियमित रूप से बच्चों को समय पर पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने और केंद्र में साफ-सफाई बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास की बुनियाद हैं, इसलिए यहां दी जाने वाली सेवाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। श्रीमती राजवाड़े ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि केंद्रों में पंजीकृत बच्चों को समय पर पूरक पोषण आहार, टीकाकरण और अन्य सेवाएं सुनिश्चित की जाएं। साथ ही गर्भवती एवं धात्री माताओं को भी योजनाओं का लाभ समय पर मिले, इसके लिए विशेष निगरानी रखी जाए। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने ग्रामीणों से चर्चा कर केंद्र की व्यवस्था की जानकारी ली और उन्हें बच्चों की शिक्षा व पोषण संबंधी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए जागरूक किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिला और बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं पोषण को लेकर प्रतिबद्ध है और इस दिशा में सतत प्रयास जारी हैं। निरीक्षण के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

किसानों को खाद नहीं मिलने पर भड़की जिपं सदस्य

रामानुजगंज। आदिम जाति सेवा सहकारी समिति कामेश्वर नगर में किसानों को खाद वितरण में घोर अनियमितता का मामला सामने आया है। समिति द्वारा किसानों को खाद देने के लिए 11 अगस्त को परमिट काटा गया था, लेकिन एक महीना बीतने के बावजूद अब तक किसानों को खाद उपलब्ध नहीं कराया गया है।जिला पंचायत सदस्य श्रीमती साधना संतोष यादव ने समिति की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करते हुए किसानों के साथ धोखाधड़ी की बात कही है। उन्होंने बताया कि दो दिन पूर्व समिति में खाद की खेप आई है, फिर भी किसानों को खाद देने से इनकार किया जा रहा है। जब किसान खाद की मांग करते हैं, तो समिति के कर्मचारी उन्हें 266 प्रति बोरी के हिसाब से पैसा वापस देने की बात कह रहे हैं और यह कहकर टाल दिया जा रहा है कि अब खाद नहीं मिल पाएगा। श्रीमती यादव ने इसे किसानों के साथ अन्याय और धोखाधड़ी करार देते हुए कहा कि यह पूरा मामला जांच का विषय है और संबंधित अधिकारियों से इसकी शिकायत की जाएगी।

बाड़ी में गांजा की खेती करने वाला आरोपी गिरफ्तार, भेजा गया जेल

हरिभूमि न्यूज ⏭ अम्बिकापुर

सामरी पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर अपनी बाड़ी में गांजा की खेती करने वाले आरोपी को गिरफ्तार करने के साथ ही गांजे के 12 नग पौधों को जब्त किया है। आरोपी को एनडीपीएस एक्ट की धारा 20बी के तहत न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है।

थाना प्रभारी विजय प्रताप सिंह को रविवार को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम राजेन्द्रपुर बीचपारा निवासी विनोद नगेसिया पिता बहादुर नगेसिया ने अपनी बाड़ी में मक्के के साथ गांजे के पौधे लगाया है। सूचना पर पुलिस टीम गांव पहुंची तथा ग्रामीणों की उपस्थिति में विनोद के घर एवं बाड़ी की तलाशी ली तो गांजा के 12 पौधे बरामद किए गए। पौधों का वजन 8.340 किलोग्राम निकला। जब्त पौधों की अनुमानित कीमत 33 हजार रूपए आंकी गई है। गवाहों के समक्ष 50 एनडीपीएस एक्ट के तहत नोटिस देकर पौधों के जब्ती की कार्रवाई की गई तथा आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

डेढ़ लाख मूल्य का 5 किलो गांजा बरामद

सूरजपुरध/बिहारपुर। मुखबीर से मिली सूचना पर चांदनी पुलिस ने ग्राम नवाटोला निवासी मीरा देवी साहू पति स्व.लोकनाथ साहू (40वर्ष) के घर की तलाशी लेकर 5 किलो गांजा बरामद किया है। जब्त गांजे की कीमत करीब 1 लाख 50 हजार रूपये बताया जा रहा है। मामले में धारा 20(बी) एनडीपीएस एक्ट के तहत आरोपी महिला को गिरफ्तार किया गया। कार्रवाई में थाना प्रभारी प्रदीप सिदार व अन्य पुलिसकर्मी उपस्थित थे।

न्यायालय तहसीलदार, सूरजपुर,
जिला-सूरजपुर (छ.ग.)
रा.प्र.क्र......../ब-121/2/9/2025

ईश्तहार

आवेदिका का नाम ननकी पति जगसाय जाति गोड़ निवासी ग्राम बसदेई प.ह.नं तहसील सूरजपुर, जिला-सूरजपुर (छ.ग.) ने अपने मां महरजिया मृत्यु दिनांक 20/12/2012 का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। जिस पर कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है। इस संबंध में किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो दिनांक 16/9/2025 को समय 11.00 बजे इस न्यायालय में अपना स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर आपत्ति दावा प्रस्तुत कर सकता है। नियत तिथि के बाद प्राप्त आपत्ति/दावा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। तदनुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 2/9/2025 को जारी किया जाता है।

तहसीलदार
सूरजपुर जिला-सूरजपुर (छ.ग.)

नायब तहसीलदार सूरजपुर-1, जिला सूरजपुर (छ.ग.)
आगामी तिथि 25/09/2025

// ईश्तहार//

इस सार्वजनिक ईश्तहार के जरिये सर्व साधारण आम जनता/संस्था/विभाग को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है आवेदिका श्रीमती गीता सिंह निवासी ग्राम केतका, तहसील व जिला सूरजपुर (छ.ग.) द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत कर ग्राम केतका प.ह.नं. 13, रा.नि.मं. पचिरा, तहसील सूरजपुर स्थित खसरा नम्बर 769/1, 769/2 में हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड को पेट्रोल पम्प स्थापित करने के लिए प्रस्तावित कराये जाने हेतु अनुरोध किया गया है।

अतः इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था/विभाग को कोई दावा/आपत्ति हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक/लीगल एजेंट के माध्यम से अपना दावा/आपत्ति दिनांक 25/09/2025 को न्यायालयीन अवधि में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति के संबंध में कोई विचार नहीं किया जायेगा।

किया गया। आज दिनांक 09/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

नायब तहसीलदार
सूरजपुर
जिला-सरगुजा

न्याया.- प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ श्रेणी अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ.ग.

उ.प्र.क्र.-28/2025
प्रो.न.-493/25
आगामी पेशी तिथि 09/10/2025

संजय गुप्ता आ. स्व. सुरेश कुमार गुप्ता उम्र लगभग 45 वर्ष, निवासी ग्राम झिक्की, थाना व तहसील-बगीचा जिला-जशपुर छ.ग., हाल मुकाम ग्राम कुन्नी थाना व तहसील-लखनपुर जिला-सरगुजा छ.ग.
--------------आवेदक

-:प्रति:-

1. शाखा प्रबंधक छ.ग. राज्य ग्रामीण बैंक शाखा कुन्नी तहसील-लखनपुर जिला सरगुजा छ.ग.
2. आम जनता। -------अनावेदकगण

आवेदन अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

सर्व साधारण आग जनता निवासी ग्राम-झक्की थाना व तहसील-बगीबा जिला-जशपुर छ.ग., हाल मुकाम ग्राम कुन्नी थाना व तहसील-लखनपुर जिला सरगुजा छ.ग. एवं हितबद्ध नागरिकों को सूवित किया जाता है कि आवेदक द्वारा भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम की धारा 372 का वाद प्रस्तुत कर अपनी पत्नी स्व. मीना गुप्ता की मृत्यु दिनांक 06/12/2024 होना बताते हुए स्व. मीना गुप्ता को मृत्यु उपरांत छ.ग. राज्य ग्रामीण बैंक शाखा कुन्नी में बचत खाता क्र.-77067546870/- जिसमें जमा राशि 22,000/ (बाईस हजार रूपये) एवं प्रतिमाह का आर.डी. एकाउन्ट जिसका खाता क्रमांक 77067546994 /- जिसमे जमा राशि 2,68,000/(दो लाख अड़सठ हजार रूपये) राशि को प्राप्त करने हेतु उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र की मांग की गई है। आम नागरिक को ईश्तेहार के द्वारा सूचित किया जाता है कि सुनवाई तिथि दिनाक 09/10/2025 को नियत है।

अतः इस ईश्तेहार के माध्यम से सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि स्व. मीना गुप्ता के मृत्यु उपरांत छ.ग. राज्य ग्रामीण बैंक शाखा कुन्नी में बचत खाता क्र.-77067546870/- जिसमें जमा राशि 22,000/ (बाईस हजार रूपये) एवं प्रतिमाह का आर.डी. एकाउन्ट जिसका खाता क्रमांक 77067546994 / जिसमें जमा राशि 2,68,000/ (दो लाख अड़सठ हजार रूपये) जमा राशि को प्राप्त करने हेतु उत्तराधिकार किसी व्यक्ति या नागरिक को आपत्ति हो तो वह पेशी तिथि 09/10/2025 तक अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। पेशी दिनांक के पश्चात् प्रस्तुत आपत्ति अमान्य होगी और आवेदिका को उत्तराधिकार प्रमाण पत्र प्रदान कर दिया जायेगा यदि किसी कारण वश उस तिथि को सार्वजनिक अवकाश हो जाता है तो आगामी कार्य दिवस पर प्रकरण की सुनवाई होगी।

मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से आज दिनाक 06.09.2025 को जारी किया गया।

(पल्लव रघुवंशी)
न्या. प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ श्रेणी
अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा छ.ग.

ॐ जय माँ कंकाली ॐ
राजयोग- धनयोग, विवाह, संतान, मंत्रीयोग, राजपत्रित पद, व्यापार संबंधित प्रश्न, यात्रा ट्रांसफर एवं अन्य ज्योतिष संबंधी प्रश्नोत्तर, 9 ग्रह 27 नक्षत्र 64 योगिनी, वास्तु शास्त्र तथा प्रश्नोत्तर ज्योतिष द्वारा प्राप्त करें, तंत्र द्वारा वशीकरण, विवाह या किसी भी परेशानी से तत्काल लाभ प्राप्त करें।
त्रिकालय स्वामी - तांत्रिक सम्राट
डॉ.जे.पी. दुबे (पुष्पेन्द्र)
ज्योतिष रत्न, पी.एच.डी., (गोल्ड मेडलिस्ट)
नोट- स्वामी जी प्रत्येक दिन अम्बिकापुर में उपलब्ध रहेंगे!!
डॉ.जे.पी. दुबे
मो.9630231500, 9630995600
पता - कार्मेल स्कूल गेट नम्बर 4 वसुंधरा सनसिटी गेट के बाजू राजनियास अपार्टमेंट अम्बिकापुर (छ.ग.)
आने से पूर्व अपाइंटमेंट अवश्य लेवें

तेज डायग्नोस्टिक/ब्लड बैंक (सेंटर)
माता राजरानी मेमोरियल MRM हॉस्पिटल
बाबूपारा, जोड़ा तालाब के सामने अम्बिकापुर में परामर्श हेतु प्रतिदिन उपलब्ध विशेषज्ञ
डॉ.आशीश जायसवाल - जनरल फिजिशियन
डॉ.हेमन्त कुमार बी - शिशु एवं बाल्य रोग विशेषज्ञ
डॉ.सोनल गार्डिया - जनरल एवं लैप्रोस्कोपी सर्जन
डॉ.भावना गार्डिया - स्त्री रोग विशेषज्ञ
डॉ.जी.के.दामले - नाक कान गला रोग विशेषज्ञ
डॉ.नताशा शर्मा - स्त्री रोग विशेषज्ञ
डॉ.रोशन आरा - एम.डी.आर.डी.(सोनोग्राफी) विशेषज्ञ
डॉ.हिमांशु गुप्ता - कैंसर रोग विशेषज्ञ
डॉ.कमल नारायण गुप्ता - श्वास,छाती एवं टी.बी.रोग विशेषज्ञ
डॉ.अभिजीत भट्टाचार्य - जनरल फिजिशियन
अग्रिम पंजीयन हेतु सम्पर्क करें 07774222555, 9425583780, 9826183780, 8224007799, 8718003300, 6262639090
आयुष्मान योजना द्वारा भर्ती, सर्जरी, उपचार एवं जांच की सम्पूर्ण सुविधा उपलब्ध

सरगुजा मार्केट

डॉ. तुषार जैन
M.B.B.S., M.D. (पल्मोनरी मेडिसिन)
श्वांस, एलर्जी, छाती, निद्रा एवं टी.बी. रोग विशेषज्ञ
डॉ. दीपक अग्रवाल
(हड्डी रोग विशेषज्ञ)
दिनांक - 14 सितम्बर 2025 दिन रविवार
सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक
निशांत मेडिकोज
देवीगंज रोड अम्बिकापुर सरगुजा (छ.ग.)
पंजीयन हेतु फोन नं. 7354260555

छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध एवं सीनियर
मूत्र रोग विशेषज्ञ
डॉ.राहुल कपूर
(Laparoscopy Urosurgeon)
दिनांक 24 सितम्बर 2025 दिन - बुधवार
अग्रिम रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है (O.P.D.) 8225888500
डॉ फिरदौसी हॉस्पिटल
MULTI SPECIALTY SURGICAL HOSPITAL
खरसिया नाका अम्बिकापुर, जिला - सरगुजा

न्यूरो ओ.पी.डी.
डॉ.हर्षित मिश्रा
MBBS, MS, M.ch (Neuro Surgery)(AIIMS DELHI)
कंसल्टेंट न्यूरोसर्जन
WE CARE SUPERSPECIALITY HOSPITAL RAIPUR
शनिवार, 13 सितंबर, 2025
को परामर्श के लिए उपलब्ध रहेंगे।
प्रातः 10:30 से दोपहर 02:30 बजे तक
07774-221101, 9407910331, 9488142243, 7869917120
संजीवनी मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल
नया बस स्टैण्ड, गोधनपुर, अम्बिकापुर

TOP IN SURGUJA

गायत्री हॉस्पिटल
CREATING HEALTHY TOMORROW
छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध डॉक्टर अब अम्बिकापुर में दिनांक - 7 सितम्बर 2025, रविवार
सुप्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डॉ.आशु जैन
किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ.विनय कुमार ए.बी.
गैस्ट्रो - इंटेस्टाइनल एवं लिवर विशेषज्ञ डॉ.आकाश गर्ग
सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक विशेषज्ञ डॉ.रितेश सिंह
बनारस रोड, पी.जी. कॉलेज मैदान के सामने, अम्बिकापुर (छ.ग.) मो.8120906000 | 8120809000

अपोलो हॉस्पिटल बिलासपुर के लिवर एवं पेट से संबंधित रोग के सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर द्वारा ओपीडी.
अम्बिकापुर में... डॉ.आकाश गर्ग
दिनांक - 07 सितम्बर 2025, रविवार
समय - सुबह 11:30 से दोपहर 2:30 बजे तक
अपोलो हॉस्पिटल बिलासपुर के सुपर स्पेशलिस्ट ओपीडी अम्बिकापुर में
डॉ.विनय कुमार
दिनांक - 07 सितम्बर 2025, रविवार
समय - 11.30 से शाम 4 बजे तक
तेज डायग्नोस्टिक/ब्लड बैंक (सेंटर) जोड़ा तालाब के सामने, अम्बिकापुर 07774222555, 8718003300, 8085886678, गायत्री हॉस्पिटल बनारस रोड, पी.जी. कॉलेज मैदान के सामने, अम्बिकापुर (छ.ग.) 9424250281, 8120906000

बर्न, प्लास्टिक एवं कॉस्मेटिक सर्जरी विशेषज्ञ
डॉ. रौनक कलवानी
M.ch, Ms, ATLS, M.B.B.S
प्लास्टिक, कॉस्मेटिक एवं माइक्रोसर्जन
परामर्शदाता : अपोलो हॉस्पिटल, बिलासपुर
दिनांक - 31 अगस्त, 2025
समय - सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक
डॉ फिरदौसी हॉस्पिटल
खरसिया नाका अम्बिकापुर, जिला - सरगुजा

गुप्त रोग का 100% शर्तिया ईलाज
लिंग वर्धक यंत्र भी उपलब्ध
बिना आपरेशन के अण्डकोष, बवासीर, भगंदर का गारंटी के साथ आयुर्वेदिक दवा द्वारा ईलाज
25 साल से स्थायी
संपर्क - विश्वास औषधालय
बिलासपुर रोड, लक्ष्मीपुर शास.स्कूल के पास अम्बिकापुर - मोबा. 7898942870
समय- सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक

आप परेशान क्यों हैं?
वास्ती शिफा
खाना रूहानी जड़ी-बूटी द्वारा ईलाज
बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए मिलिए।
परामर्श शुल्क मात्र 500 रु.
पता- वास्ती मंजिल, महामाया प्रवेश द्वार, शहीद अब्दुल हमीद चौक वास्ती नगर रिंग रोड अम्बिकापुर, जिला- सरगुजा (छ.ग.)
मो. 9753266386

अमृत काढ़ा कामशी
मलेरिया एवं टाईफाईड
अचूक औषधि
यह दवा 8 प्रकार के बुखारों को मात्र 3 खुराक में जड़ से समाप्त कर देती है।
विजरा माल्ट
शादी से पहले या शादी के बाद में पुरुष बांझपन एवं नंपुसकता का विश्व का सबसे उत्तम दवा एक भी शुक्र कीट जिंदा या मुर्दा मिलने पर 100% ईलाज
विजरा पावर
शादी के बाद यह दवा पहले से दसवें दिन तक किसी तरह के कमजोरी को दूर कर सिथिलता एवं शीघ्र पतन को दूर कर आंतरिक ताकत का एहसास कराती है।
चिराग हर्बल घड़ी चौक, अम्बिकापुर मो. 9826461355

खबर संक्षेप

गणेश पूजा के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम आज

कुरूवां। गणेश पूजा के उपलक्ष्य में ग्राम कुरूवां केनापारा में तरूण नवयुवक मंडल मंच द्वारा 10 सितंबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी होगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम को लेकर अतुल दुबे, तुलेश्वर राजवाड़े, सत्येन्द्र राजवाड़े, दीप नारायण, देवनारायण, राजेश दुबे, सरपंच अनेश टोप्पो सक्रिय है।

एसईसीएल बिश्रामपुर में पदस्थ 11 सुरक्षाकर्मियों को पदोन्नति

बिश्रामपुर। एसईसीएल के विभिन्न क्षेत्रों में पदस्थ 86 सुरक्षाकर्मियों को कंपनी प्रबंधन ने पदोन्नति प्रदान की है जिनमें से बिश्रामपुर क्षेत्र में पदस्थ 11 सुरक्षा कर्मी इस सूची से लाभान्वित हुए हैं,बिश्रामपुर क्षेत्र में पदस्थ प्रधान सुरक्षा प्रहरी राम सिंह के सहायक सुरक्षा उपनिरीक्षक के पद पर पदोन्नत होने पर आज मंगलवार को क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय में डॉ संजय सिंह व महाप्रबंधक संचालन जीके रॉय ने राम सिंह के कंधे में स्टार लगा कर पदोन्नति की शुभकामनाएं दी।इस अवसर पर अधिकारियों ने सहायक सुरक्षा उपनिरीक्षक को ईमानदारी से कंपनी के हित में कार्य करते रहने के लिए प्रेरित किया।इस दौरान क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी अमरेंद्र नारायण सिंह सहित सहित अन्य लोग उपस्थित थे,गौरतलब है कि 6 सितंबर को कंपनी मुख्यालय से जारी प्रमोशन सूची में 36 सुरक्षा प्रहरियों को वरिष्ठ सुरक्षा प्रहरी जबकि 44 वरिष्ठ सुरक्षा प्रहरियों को प्रधान सुरक्षा प्रहरी, वहीं 6 प्रधान सुरक्षा प्रहारियो को सहायक सुरक्षा उपनिरीक्षक के पद पर पदोन्नति दी गई है,सभी पदोन्नत कर्मियों के लिए 6 माह की परिवीक्षा अवधि निर्धारित की गई है।

ग्राम पंचायत कंचन टोली में हुआ फुटबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ

कुसमी। ग्राम पंचायत कंचन टोली में फुटबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ जनपद उपाध्यक्ष अशोक सोनी और सरपंच नमिता भगत की उपस्थिति में किया गया। कुसमी विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत कंचन टोली ग्राम पंचायत में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता में कुल 32 टीमों ने हिस्सा लिया है। रविवार को जनपद उपाध्यक्ष अशोक सोनी, कंचन टोली सरपंच की नमिता भगत की उपस्थिति में फुटबॉल खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। शुभारंभ के अवसर पर ग्राम पंचायत जवाहर नगर एवं नगर पंचायत कुसमी के दर्री टोला के बीच प्रथम मैच खेला गया, दूसरा मुकाबला जवाहर नगर एवं ग्राम पंचायत राम नगर के बीच हुआ। फुटबॉल खेल प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 31 हजार, द्वितीय 15 हजार एवं तृतीय पुरस्कार 6 हजार सहित सांत्वना पुरस्कार वितरण किया जाएगा। इस दौरान राजेश्वर गुप्ता, सतानन्द कुशवाहा, संदीप निकुंज, रविन्द्र भगत, अरुण बेक, निर्दोष, मंगल,जगदीश सहित काफी संख्या में दर्शक उपस्थित रहे।

आईटीआई में प्रशिक्षार्थियों को दी गई पाठ्यक्रम की जानकारी

अम्बिकापुर। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में नवप्रवेशित शिक्षार्थियों के लिए नव कौशल, नई राह, नया हुनर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य सी.एस.पैंकरा ने कहा कि संस्थान युवाओं को गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा देकर आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रशिक्षण अधिकारियों ने क्राफ्ट्समैन ट्रेनिंग स्कीम के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण अवधि और लाभ के बारे में बताया तथा विभिन्न योजनाओं, छात्रवृत्ति, प्लेसमेंट अवसरों लेटरल एंट्री तथा अप्रेंटिसशिप के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम में शिक्षार्थियों की शंकाओं का समाधान प्राचार्य श्री पैंकरा ने किया तथा विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम, अनुशासन और निरंतर सीखने की प्रेरणा दी।

खोपा में युवक ने दुकान में लगाई फांसी

बिश्रामपर। करंजी पुलिस चौकी के ग्राम खोपा में मंगलवार दोपहर 39 वर्षीय युवक सिखल राम राजवाड़े पिता बिरझु राम ने खोपा धाम के समीप अपने दुकान में गमछा के सहारे फांसी लगा खुदकुशी कर ली है।परिजनो के मुताबिक युवक शराब पीने का आदि था।सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा व पीएम कराने उपरांत मामले में मर्ग कायम किया है।

भोजन करने के बाद बिगड़ी बालक की तबीयत, मौत

अम्बिकापुर। जयनगर थाना अंतर्गत गोपालपुर निवासी बादल टेकाम आ. कृष्णा टेकाम (15 वर्ष) बीती रात परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घर में भोजन किया। भोजन करने के कुछ देर बाद ही बालक उल्टी करने लगा। बालक के पेट में दर्द तथा लगातार उल्टी करने से उसकी तबीयत काफी बिगड़ गई। परिजन बालक को तत्काल मेडिकल कॉलेज अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सको ने जांच उपरांत उसे मृत घोषित कर दिया। परिजन ने पुलिस को बताया कि बालक शाम को गांव में मछली पकड़ने गया था और घर लेकर आया जिसके बाद भोजन करते ही उसकी तबीयत खराब हो गई। बालक की संदिग्ध हालत में मौत होने पर पुलिस ने मर्ग कायम किया है।

अलग-अलग गांवों में बोल रहे धावा

दल से अलग हुए दो दंतैल बने खतरनाक

हरिभूमि न्यूज ⏭ अम्बिकापुर

मैनपाट में लम्बे समय से भ्रमण कर रहा 13 हाथियों का दल ग्रामीणों की सुरक्षा की दृष्टि से बड़ी चुनौती बन गया है। मैनपाट के अलग-अलग क्षेत्रों में अकेले भ्रमण कर रहे दंतैलों ने ग्रामीणों की नींद उड़ा दी है। हाथियों की निगरानी में वनकर्मियों को भी कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है।

खास बात
- रतजगा कर रहे क्षेत्र के ग्रामीण

मैनपाट में भ्रमण कर रहे हाथियों के दल से दो दंतैल अलग हो गए हैं तथा पिछले एक पखवाड़े से अलग-अलग क्षेत्रों में भ्रमण कर रहे हैं वहीं 11 हाथियों का दल एक साथ घूम रहा है। ग्यारह हाथी कभी सीतापुर के सीमावर्ती गांवों में तो कभी कापू के सीमावर्ती गांवों में तबाही मचा रहे हैं। हाथियों के दूसरे क्षेत्र में जाने से लम्बे समय से रतजगा कर रहे ग्रामीणों को तबाही से राहत मिलने की उम्मीद थी लेकिन अकेले घूम रहे हाथियों ने ग्रामीणों की परेशानी और अधिक बढ़ा दी है। लोनर हाथी कभी भी बस्ती में पहुंच जा रहे हैं जिससे अफरा-तफरी की स्थिति निर्मित हो जा रही है तथा ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर भागकर अपनी जान बचानी पड़ रही है। लोनर हाथी पिछले 10 दिनों से ग्राम बरडांड, बाबा पहाड़ एवं बरवाली बस्ती में धावा बोल रहे हैं। वन अमला एक गांव में पहुंचकर दंतैल को नियंत्रित करने के साथ ही ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा रहे हैं तभी दूसरे गांव से दंतैल के पहुंचने की सूचना आ जा रही है। ऐसे वनकर्मियों को भी पूरी रात भागदौड़ करनी पड़ रही है। बीती रात एक दंतैल बाबा पहाड़ में पहुंच गया था वनकर्मी ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की पहल कर ही रहे थे कि बरडांड में दूसरे दंतैल के पहुंचने की सूचना मिली। गजराज वाहन से दंतैल को खदेड़ा गया तो दूसरा दंतैल बरवाली बस्ती में पहुंच गया। वनकर्मियों एवं ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद सुबह 4 बजे दोनों दंतैलों को कापू जंगल में खदेड़ा।

गांव में निगरानी करते वनकर्मी व ग्रामीण।

क्षतिग्रस्त घर।

हमले में गंभीर महिला की मौत

पांच दिन पूर्व हाथियों के हमले में गंभीर रूप से घायल जामकानी परसापारा निवासी सुकवारो पति प्रेमसाय कंवर (55वर्ष) की ईलाज के दौरान सोमवार की शाम मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मौत हो गई। परिजन ने बताया कि 4 सितम्बर को पति-पत्नी घर में सो रहे थे। इस दौरान मध्यरात्रि 11 हाथी पहुंचे एवं घर के छप्पर को उखाड़ने लगे। शोर सुनकर नींद खुली तो पति-पत्नी किसी आदमी की हरकत समझ बाहर निकले तो हाथियों को खड़े देख घबरा गए तथा दोनों सुरक्षित ठिकाने की ओर भागने लगे। इस दौरान प्रेमसाय तो भाग निकला लेकिन सुकवारो भागने के दौरान अंधेरे में हाथी के पिछले पैर से टकराकर गिर पड़ी। इस दौरान हाथी उसके बाए पैर को कुचलकर दल के साथ चला गया। हाथियों के जाने पर ग्रामीणों ने उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया जहां स्थिति बिगड़ने पर चिकित्सकों ने उसे मेडिकल कॉलेज अस्पताल में रिफर कर दिया। उपचार के दौरान पीड़िता ने सोमवार को दम तोड़ दिया। परिजन ने बताया कि एक महीने पूर्व भी हाथियों ने धावा बोला था तथा घर में तोड़फोड़ की थी लेकिन विभाग द्वारा अब तक क्षतिपूर्ति राशि का भुगतान नहीं किया है। हाथियों का दल अभी भी जामकानी एवं अलोला जंगल में जमा है। बीती रात अकेले घूम रहा दंतैल भी बस्ती में पहुंचा था।

फसलों को कर रहे तबाह

हाथी घरों में तोड़फोड़ मचाने के साथ ही धान व मक्का की फसल को तबाह कर रहे हैं। दल से अलग होने के बाद अकेले घूम रहे दंतैल आक्रामक हो गए हैं तथा बार-बार एक ही गांव में धावा बोल रहे हैं। अकेले घूम रहे हाथी आदमी को देखते ही हमलावर हो जा रहे हैं। सोमवार को ग्राम बाबा पहाड़ निवासी एक युवक का दंतैल से सामना हो गया था। युवक ने खाई में कूदकर अपनी जान बचाई।

विधायक ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं, किया निराकरण

हरिभूमि न्यूज ⏭ प्रतापपुर

विधायक निवास में जन समस्या शिविर लगाया गया जहां बड़ी संख्या में ग्रामीण अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे। विधायक ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनने के पश्चात कुछ समस्याओं का त्वरित निराकरण किया।

विधायक श्रीमती शकुंतला सिंह पोर्ते के विधायक निवास में जन समस्या शिविर विधायक की उपस्थिति में लगाया गया। प्रतापपुर ब्लॉक अंतर्गत सभी गांवों से बड़ी संख्या में लोग अपनी अपनी समस्या व सुझावों लेकर विधायक निवास पहुंचे। विधायक ने एक एक करके लोगों की समस्याओं सुनी और तत्काल उनका निराकरण किया। जन शिविर में प्रतापपुर ब्लॉक के समस्त विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे जिससे लोगों की समस्याओं का समाधान शिविर में ही हो गया। विधायक शकुंतला सिंह ने कहा कि क्षेत्र की जनता की समस्या उनकी समस्या है। किसी भी समस्या के लिए अगर कोई अधिकारी आनाकानी करता है तो सीधा उनसे बताएं, अगर किसी प्रकार का कोई अधिकारी जनता को परेशान करेगा तो उसकी खैर नहीं है। जन समस्या शिविर में मुकेश तायल, मानती योगेंद्र सिंह, अजीत शरण सिंह, लक्ष्मी गुप्ता, अवधेश पांडे, नवीन नाविक, सौरव मानिकपुरी, नीलम, धर्मेंद्र श्रीवास्तव, लालमेन पैकरा, योगेंद्र सिंह, संजय, संदीप रजक, नंदा यादव, विक्रम नामदेव, अजय सिंह, दीपक दुबे, सोनू शर्मा,अंकित सिंह, अभिषेक कुशवाहा, संतोष रजक, बुधराम देवांगन, अक्षय रवि, नीलम रजक सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

कुम्हारों के लिए गांवों में 5 एकड़ भूमि आरक्षित कराने की मांग, सौंपा ज्ञापन

अम्बिकापुर। कुम्हारों के लिए प्रत्येक गांव में मिट्टी की कार्य कराने के लिए 5 एकड़ भूमि आरक्षित करने की आदेश जारी करने के बावजूद आज तक जिले के गांव में भूमि आवंटित नहीं किए जाने को लेकर कुम्हार समाज पदाधिकारियों ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर पहल कराने की मांग की है।

कुम्हार समाज के जिला अध्यक्ष शंकर प्रजापति के नेतृत्व में कलेक्टर को सौंपे ज्ञापन में बताया है कि 2006 में तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह की निर्देश पर राजस्व विभाग के अवर सचिव विलियम कुजूर ने भू राजस्व संहिता 1959 की धारा 237 का हवाला देते हुए 26 सितम्बर 2006 को आदेश जारी कर छत्तीसगढ़ के प्रत्येक ग्राम पंचायत में कुम्हारों के लिए 5 एकड़ भूमि आरक्षित करने की आदेश जारी किया है। मामले में राजस्व आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव नीलम नामदेव एक्का ने 20 अप्रैल 2023 को आदेश जारी कर राज्य के समस्त कलेक्टर को निर्देशित करते हुए कुम्हारों के लिए मिट्टी कार्य प्रयोजन के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में कुम्हारों के लिए 5 एकड़ भूमि आरक्षित करने के लिए फिर से आदेश जारी कर कलेक्टरों को निर्देशित कर जिले के तहसीलदार द्वारा तहसील स्तर पर सर्वे कराकर आरक्षित भूमि करने कहा गया था। कुम्हार समाज के लिए सरकार कई बार आदेश जारी करने की बावजूद जिले के कलेक्टर इस मामले में गंभीर नहीं ले रहे हैं। समाज के लोगों ने गांव में 5 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने की मांग की है। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष घासी राम प्रजापति, सुहांग प्रजापति, शिवनाथ प्रजापति, परमेश्वर प्रजापति सहित अन्य मौजूद थे।

ईद मिलादुन्नबी पर किया गया रक्तदान

झिंगो। ईद मिलादुन्नबी के मौके पर रक्तदान एवं सुन्नत का कार्यक्रम जिला अध्यक्ष जफर खान की अध्यक्षता में किया गया। संगठन ने राजपुर ब्लॉक में 6 सितंबर को ईद मिलादुन्नबी के मौके पर रक्तदान एवं सुन्नत का कार्यक्रम तेज बल्ड सेंटर के डॉक्टरों की टीम ने संगठन के नेतृत्व में शिविर लगाया। जिला अध्यक्ष जफर खान ने बताया कि यह सामाजिक काम है जिसमें समाज को लाभ होगा। बल्ड जैसी समस्याओं से निदान पाने के लिए एक शुरुआत किया गया है। संगठन के काफी लोगों ने रक्तदान किया। जफर खान बताया कि इस तरह के सामाजिक काम पूरे जिले में लगातार किया जाएगा जिससे समाज में लोगों लाभ मिल सके। रक्तदान एवं सुन्नत के कार्यक्रम में राजपुर चिकित्सालय के बीएमओ डॉ. आलोक मिश्रा ने दवाओं और चिकित्सालय से स्टाफ भेजा। इस दौरान जफर खान, इंतखाब, मुस्तफा, मुबारक, तौफीक, इमरान, मोहसिन, सलमान, आकिब, नेसार, सद्दाम, हसरत, रईस, इख़लाक, इरफान, एहसान, महफूज, मोजाफ़रि, साबिर, राजू सहित अन्य उपस्थित थे।

भूषा लोड पिकअप अनियंत्रित होकर पलटा, चालक की मौत

सीतापुर। भूषा लोड पिकअप अनियंत्रित होकर खेत में पलट गया। इस हादसे में पिकअप चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल चालक को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस मामले में पुलिस ने मर्ग कायम किया है। बड़ी बात यह है कि अंदरूनी चोट लगने के बाद भी वाहन मालिक ने चालक को उपचार के लिए समय पर भर्ती नहीं कराया।

- वाहन स्वामी ने मामूली चोट बोलकर भेज दिया घर, उपचार के दौरान तोड़ दम

बताया जा रहा है कि ग्राम कतकालो निवासी 55 वर्षीय लोभन चौहान भूषा व्यवसायी मुकेश अग्रवाल निवासी सीतापुर के यहां चालक का काम करता था। रविवार को लोभन पिकअप वाहन क्रमांक यूपी 64 एटी 9579 से भूषा लेने रायगढ़ जिले के ग्राम मड़वातल गया था। भूषा लेकर वापस लौटते समय थाना क्षेत्र के ग्राम कोटछाल के समीप चालाक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया और तेज रफ्तार पिकअप अनियंत्रित होकर खेत मे पलट गया। इस घटना में चालक को अंदरूनी चोट आई थी। घटना की सूचना मिलने के बाद चालक की पत्नी अपने परिचित के साथ बाइक से कोटछाल जाने के लिए निकली थी इस दौरान ग्राम डांगबुड़ा के पास सामने से पिकअप वाहन में घायल चालक को लेकर भूषा व्यवसायी मुकेश अग्रवाल आ रहा था। भूषा व्यवसायी घायल चालक को लेकर ग्राम सोनतराई स्थित अपने भूषा गोदाम पहुंचा। जब युवक की पत्नी मौके पर पहुंची तो व्यवसायी ने चालक को ज्यादा चोट नहीं आने की बात कहते हुए उसे उसकी पत्नी के सुपुर्द कर दिया। परिजन भी भूषा व्यवसायी की बातों पर भरोसा करते हुए चालाक को गोदाम से अपने साथ बाइक में लेकर घर पहुंचे लेकिन घर पहुंचने पर पता चला कि वह बेहोश है। दुर्घटना में चालक को कमर, पैर, बाई पसली एवं शरीर के अंदरूनी हिस्से में गंभीर चोट लगी थी। देर रात युवक को उपचार के लिए एंबुलेंस के जरिए सीएचसी में भर्ती कराया गया जहां उपचार के दौरान गंभीर हालत में युवक की मौत हो गई।

बिश्रामपुर समेत 9 स्वास्थ्य केंद्रों में मनाया गया प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान दिवस

बिश्रामपुर। मातृत्व जीवन का सबसे अहम पड़ाव होता है, लेकिन यदि गर्भावस्था के दौरान समय पर जांच और इलाज न मिले तो यह मां और शिशु दोनों के लिए जोखिम भरा हो सकता है,इसी उद्देश्य से चलाए जा रहे प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का विशेष आयोजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिश्रामपुर,लटोरी समेत अन्य 7 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में किया गया, उक्त अभियान के तहत 9 सितंबर को आयोजित इस विशेष दिवस पर सैकड़ों गर्भवती महिलाएं स्वास्थ्य केंद्र पहुंचीं,यहां उनका रजिस्ट्रेशन,स्वास्थ्य जांच,रक्त एवं मूत्र की जांच,सोनोग्राफी,दवा वितरण,पोषण परामर्श औरकाउंसलिंग की व्यवस्था की गई थी,अभियान में विशेष रूप से हाई रिस्क प्रेगनेंसी वाली महिलाओं की पहचान कर उन्हें आवश्यक परामर्श और निगरानी में रखने की पहल की गई,सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिश्रामपुर में इस अभियान को सफल बनाने के लिए पहले से ही पूरी तैयारी कर ली गई थी,यहां पर अलग रजिस्ट्रेशन काउंटर,काउंसलिंग डेस्क,लैब जांच और चिकित्सक परामर्श,दवा वितरण केंद्र की व्यवस्था की गई थी,इस अवसर पर सुरजपुर बीएमओ डॉ अमित भगत ने कहा कि राज्य शासन के निर्देश पर जिले भर की सभी गर्भवती महिला को प्रत्येक माह की 9 और 24 तारीख को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं दी जा रही हैं,मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है,अभियान को सफल बनाने में बीएमओ डॉ अमित भगत समेत शत्रुघ्न भगत,डॉ आकृति दुबे,डॉ ज्योत्सना बड़ा और सिस्टर मीनू राय सक्रिय रहे,गर्भवती महिलाओं ने इस अभियान को लेकर संतोष जताया,कई महिलाओं ने कहा कि पहले उन्हें नियमित जांच और सलाह के लिए दूर जाना पड़ता था, लेकिन अब उन्हें हर महीने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में ही सारी सुविधाएं मिल जाती हैं।

युवा लेखक प्रशांत की नई पुस्तक कवच के पार का विमोचन

सीतापुर। युवा लेखक एवं साहित्यकार प्रशांत चतुर्वेदी द्वारा लिखित पुस्तक कवच के पार का विमोचन किया गया। कमलापुरी भवन में आयोजित गरिमामयी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक रामकुमार टोप्पो ने इसका विमोचन किया। इस दौरान विधायक ने लेखक प्रशांत चतुर्वेदी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि लेखक अपनी लेखनी से हमेशा समाज को जगाने का काम करता है। पेशे से शिक्षक प्रशांत चतुर्वेदी का एक लेखक के रूप में अलग पहचान है।उन्होंने इससे पहले स्वर्ग की अनुभूति केदारनाथ यात्रा नामक पुस्तक लिखी थी।जिसे पाठकों द्वारा काफी सराहा गया था। उन्होंने अपनी दूसरी पुस्तक कवच के पार में जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे जिज्ञासा शक्ति प्रेम शांति और मोक्ष की तलाश को दर्शाया है। पुस्तक विमोचन के पश्चात कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें नगर की कवियत्री मधु गुप्ता, नीलम सोनी, अनिता तिवारी, कवि कृष्णमोहन निगम, प्रकाश गुप्ता ने शिरकत की एवं अपनी कविता का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन सुशील मिश्र एवं आभार प्रदर्शन प्रिया एवं प्राची चतुर्वेदी ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर राजकुमार गुप्ता, मोहन अग्रवाल समेत काफी संख्या में श्रोतागण उपस्थित थे।

हरिभूमि नं.1 आवश्यक सूचना

प्रिय ग्राहक बंधुओं आपका अपना
प्रिय अखबार हरिभूमि के स्थान पर
अगर कोई अन्य अखबार दिया जा रहा है
तो कृपया इस नंबर पर संपर्क करें

रिंग रोड चोपड़ापारा, काली मंदिर के पास उड़िया पण्डित काम्पलेक्स अम्बिकापुर मो. 9826154736

नगर के ज्ञानोदय श्रवण बाधित विद्यालय में मनाया गया त्रिदशक समारोह

हरिभूमि न्यूज ⏭ बिश्रामपुर

शिक्षा के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में दिव्यांगजनों को जोड़ने का कठिन लेकिन गौरवपूर्ण सफर तय करने वाले ज्ञानोदय श्रवणबाधित विद्यालय में सोमवार को 30 वें वर्षगांठ पर त्रिदशक समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने दीप प्रज्वलित कर किया,उनके साथ विशिष्ट अतिथियों में भाजपा के वरिष्ठ नेता चरण सिंह अग्रवाल,अजय गोयल,सुरजपुर जनपद अध्यक्ष स्वाति सिंह,नगर पंचायत बिश्रामपुर अध्यक्ष निर्मला यादव, उपाध्यक्ष दीपेंद्र सिंह चौहान, राजेश यादव, देवधन राम बिंझिया, कैलाश सिरदार, हरीश राजवाड़े, शीतीकांत स्वाई, संत सिंह, गोपाल सिंह विद्रोही, रामलाल सोनी, गीता घोषाल, श्यामा पांडेय, खजानचंद जिंदल, विवेक जायसवाल उपस्थित थे। समारोह में मुख्य आकर्षण का केंद्र विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम रहा,स्वागत गीत शिक्षिका दीपिका तिवारी ने प्रस्तुत किया, बच्चों ने समूह नृत्य और लोकगीतों पर मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, विद्यार्थियों द्वारा पहलगाम आतंकी घटना पर आधारित नाट्य मंचन ने सबको भावुक कर दिया, वीएम कॉलेज ऑफ नर्सिंग और जूनियर डीपीएस के छात्रों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को और भव्य बना दिया, अतिथियों ने बच्चों द्वारा निर्मित आर्ट-क्राफ्ट,चित्रकला और रंगोली प्रदर्शनी का अवलोकन किया, मंत्री राजवाड़े और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने बच्चों से साइन लैंग्वेज में संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया, मुख्य अतिथि मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि ज्ञानोदय श्रवणबाधित विद्यालय ने 30 वर्षों में दिव्यांग बच्चों के लिए जो कार्य किया है,वह अद्वितीय और प्रशंसनीय है,संस्था के अध्यक्ष विजयराज अग्रवाल और उनकी टीम ने दिव्यांगों को शिक्षा ही नहीं दी बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर जीवन जीने की शक्ति भी दी,कन्या छात्रावास भवन की समस्या सहित विद्यालय की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समाज कल्याण मंत्रालय हरसंभव प्रयास करेगा।संस्था के अध्यक्ष विजयराज अग्रवाल ने कहा कि विद्यालय से पढ़े कई विद्यार्थी आज सरकारी सेवाओं, निजी कंपनियों और स्वरोजगार से जुड़े हुए हैं।आज जब वे अपने परिवार और बच्चों के साथ इस समारोह के साक्षी बने हैं, यह इस संस्था के संघर्ष और समर्पण का जीता-जागता प्रमाण है। विद्यालय के शिक्षकों और स्टाफ को उनके योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया।

- मूकबधिर बच्चों द्वारा बनाई गई आर्ट क्राफ्ट,रंगोली और चित्रकला प्रदर्शन का अतिथियों ने किया अवलोकन